दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ वर्ष 63 ❑ अंक-04 ❑ दिल्ली ❑ नवम्बर (द्वितीय) 2024 ❑ मूल्य : 2 रु.

40वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन

8-9 दिसम्बर को दिल्ली में सम्मानित होंगे साहित्यकार, समाजसेवी और कलाकार

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का द्विदिवसीय 40वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन 8–9 दिसम्बर, 2024 को पंचशील आश्रम, झड़ौदा (बुराड़ी बाई पास), आउटर रिंग रोड, दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के इस महासम्मेलन में देश के अलावा विदेशों के दलितोत्थान में जुड़े दलित साहित्यकार, पत्रकार, लेखक, समाजसेवी भाग लेंगे और दलितोत्थान विषयों पर विचार विमर्श करेंगे।

पहले दिन का सम्मेलन **'सम्मान दिवस'** व दूसरे दिन का सम्मेलन **'अधिकार दिवस'** के रूप में आयोजित होगा। इस अवसर पर दलितोत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए दलित साहित्यकारों और समाजसेवियों को डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार तथा डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय फेलोशिप से सम्मानित किया जायेगा।

इस अवसर पर विभिन्न प्रदेशों के दलित कलाकार अपना सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। इस दलित साहित्यकार सम्मेलन में विभिन्न दलों के राजनेता भाग लेकर दलितों की दशा व दिशा पर अपने विचार व्यक्त करेंगे। सम्मेलन के शुभावसर पर विभिन्न अवार्डों से सम्मानित किये जाने वाले महानुभाव हैं :

डा. अम्बेडकर कलाश्री इन्टरनेशनल अवार्ड-2024

श्रीमती दास कविता धन्जीभाई
इन्टरनेशनल लोक गायिका
अमेरिकन एवेन्यु, किंग आफ पुसिया, अमेरिका

डा. अम्बेडकर एक्सीलेंस सर्विस इन्टरनेशनल अवार्ड-2024

डा. सुन्दर बहादुर थापा
सोशिल वर्कर एंड एक्टीविस्ट (नेपाल)
फाउन्डर–चेयरमैन – फेडरेशन आफ नेशनल क्रिश्चियन, नेपाल

डा. अम्बेडकर ब्रदरहुड इन्टरनेशनल अवार्ड-2024

डा. मित्र पेरियार, दलित एक्टीविस्ट
एकेडेमिक रिसर्चर एंड राईटर, नेपाल

डा. अम्बेडकर इन्टरनेशनल अवार्ड-2024

डा. किशोर कुमार प्रधान
दलित एक्टीविस्ट/सोशिल वर्कर
सप्तरी, राजविराज
नेपाल

वीरांगना गुरूअमा डा. सरिता थापा नेपाल सोशिल रिफोरमर एंड एक्टीविस्ट मेमोरियल इन्टरनेशनल अवार्ड-2024

डा. सुन्दर बहादुर थापा
सोशिल वर्कर एंड एक्टीविस्ट (नेपाल)
फाउन्डर–चेयरमैन – फेडरेशन आफ नेशनल क्रिश्चियन, नेपाल

डा. अम्बेडकर नेशनल अवार्ड-2024

दलित साहित्य की अभिवृद्धि के लिए

1. **डा. राजमल सिंह 'राज'**
   दलित साहित्यकार,
   दिल्ली प्रदेश
2. **श्री रमेशचन्द्र चांगेसिया 'प्रभात'**
   दलित साहित्यकार
   उज्जैन (मध्य प्रदेश)
3. **श्री यादकरण 'याद'**
   दलित साहित्यकार
   लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
4. **डा. (श्रीमती) वीना वैगा**
   दलित साहित्यकार
   एम्यार कट्टपा,
   इडुकी (केरल)

दलित पत्रकारिता अभिवृद्धि के लिए

5. **श्रीमती पी. सुगुना विष्णुमूर्ति**
   सम्पादिका–जन मित्र समाचार पत्र
   अम्बेडकर नगर, यानम
   (पांडिचेरी–यू.टी.)

दलित संस्कृति अभिवृद्धि के लिए

6. **श्री महानन्दा सरकार दत्ता**
   चीफ सेकेट्री–कृष्टी पाथर
   (सेंटर फार लिटेरचर,
   कल्चर एंड सोशल वेल्फेयर)
   सरथाबारी, बारपेटा (आसाम)

दलितोत्थान – समाज सेवा के लिए

7. **श्री बाबूलाल निर्मल**
   सोशिल एक्टीविस्ट/सोशिल वर्कर
   अटरू, जिला–बारां (राजस्थान)

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

लोकतंत्र के चारों खंभों को मजबूत करना जरूरी

• डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

लोकतंत्र के चार स्तम्भ हैं– विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और मीडिया। भारतीय संविधान के अनुसार ये चारों कार्यरत हैं। देश के नागरिकों का भविष्य निर्धारण में इन चारों की प्रमुख भूमिका है।

देश का अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति यानी दलित– एक ऐसा वर्ग है जो देश की आबादी का एक तिहाई है। यह वर्ग वर्ण व्यवस्था और जात–पांत के आधार पर सदियों से उत्पीड़न का शिकार रहा है। इसे शिक्षा, राजनीति और धन–सम्पदा से वंचित कर सदैव पशुवत 'सेवादास' बनाये रखा। वर्ण व्यवस्था की जननी 'मनुस्मृति' विधान इन पर लागू था।

अंग्रेजी राज आने और महात्मा ज्योतिबा फूले, स्वामी अछूतानन्द, रामा स्वामी पेरियार आदि दलित समाज सुधारकों द्वारा वर्ण व्यवस्था के खिलाफ आन्दोलन चलाने के कारण दलितों के लिए शिक्षा, न्याय और शासन में दरवाजे खुले। इसके बाद बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने दलितों को समानता के अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष शुरू किया। उन्होंने अंग्रेजों के सामने अछूतों के साथ हिन्दुओं द्वारा किए जा रहे अमानवीय व्यवहार की ओर ध्यान दिलाते हुए उनसे देश की सत्ता व सम्पदा में बराबर की हिस्सेदारी की मांग की। बाबा साहब द्वारा राउंड टेबुल कान्फ्रेंस, लंदन में भारत के अछूतों को समता के अधिकार दिए जाने की मांग को स्वीकारते हुए 'कम्युनल अवार्ड' की घोषणा की जिसके तहत दलितों को उनकी आबादी के अनुपात में 'रिजर्व सीट' बनाना तथा उन्हें निर्वाचन में दो वोट का अधिकार दिए जाने की घोषणा की। महात्मा गांधी को यह मंजूर नहीं था। अतः उन्होंने इस 'कम्युनल अवार्ड' के खिलाफ पूना की यरवदा जेल में आमरण अनशन की घोषणा कर दी। हिन्दू नेताओं के भारी दबाव के आगे, बाबा साहब ने गांधी जी की जान बचाने के लिए 'कम्युनल अवार्ड' को छोड़ते हुए गांधी जी के साथ 'पूना पैक्ट' किया, जिसके तहत दलितों को उनकी आबादी के अनुपात में निर्वाचन में रिजर्व सीट व सरकारी नौकरियों व शिक्षण संस्थानों में उनका 'रिजर्व कोटा' निर्धारित करना तय हुआ। साथ ही गांधी जी ने हिन्दू धर्म से ऊंच–नीच, छुआछूत, भेदभाव मिटाने का संकल्प भी लिया।

देश आजाद होने पर बाबा साहब डा. अम्बेडकर को जब भारतीय संविधान निर्माण का काम सौंपा गया तो उन्होंने संविधान में दलितों के लिए 'आरक्षण कोटा' के साथ उन्हें समानता के मौलिक अधिकार भी प्रदान किए। लोकतंत्र के उपरोक्त चारों स्तम्भों में देश के दलितों को 'आरक्षण' के विशेष–अधिकार के आधार पर अपनी हिस्सेदारी पाने का संवैधानिक मौलिक अधिकार है।

भारतीय संविधान को लागू हुए 74 साल हो गये हैं। पर हम देखते हैं कि इन लोकतंत्र के चारों स्तम्भों ने दलितों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को निभाने में 'उपेक्षा' और 'कोताही' दिखाई है। विधायिका में भले ही दलितों का प्रतिनिधित्व आरक्षित कोटे के अनुपात में हो, पर राज्यसभा व विधान परिषदों में वह सिर्फ

(शेष पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा टू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	100/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
मेरे साक्षात्कार–मेरा जीवन संघर्ष	डा. सुमनाक्षर	300/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	100/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	100/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	100/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	100/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	100/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	200/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए अग्रिम राशि निम्नलिखित अकादमी के खाते में भेजें

Bharatiya Dalit Sahitya Akademi
A/c No. - 2592101012292 (Canara Bank)
IFSC - CNRB0002592
Branch - Model Town, Delhi

सम्पादकीय का शेष....लोकतंत्र के चारों खंभों को मजबूत करना जरूरी

नाममात्र का है क्योंकि कोई भी राजनीतिक दल वहां कोटा लागू करने के लिए तैयार नहीं है। यही हाल राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाने वाले पदों का है। उन पदों पर भी स्वतंत्र रूप से दलित प्रतिनिधियों को मनोनीत न करके सत्तारुढ़ पार्टी के लोगों को ही वहां पर मनोनीत कराया जाता है, जो संविधान व दलितों के साथ सरासर अन्याय है।

कार्यपालिका में नौकरशाही का बुरा हाल है। यहां मनु मानसिकता के लोग हावी हैं जो संविधान प्रदत्त 'आरक्षण कोटा' को पूरा करना ही नहीं चाहते। दलितों के लिए आरक्षित पदों को भरते समय 'अन–सूटेबल' या 'नाट–अवलेबल' का तगमा लगाकर उन पदों को या तो भरा ही नहीं जाता या फिर उन्हें 'सामान्य' करार देकर भर लिया जाता है। इस तरह दलितों के लिए 'आरक्षित' लाखों पद सरकार में या तो खाली पड़े हैं या फिर उनहें सवर्ण उम्मीदवारों से भर लिया जाता है। कार्यपालिका में बैठे इस मनु–मानसिकता के अधिकारियों के खिलाफ कौन कदम उठायेगा जो संविधान को अपने पांवों तले रौंद रहे हैं?

रही न्यायपालिका की बात। उसमें भी 'आरक्षित कोटे' के साथ सदैव अन्याय होता रहा है। माननीय श्री के.जी. बालकृष्णन भी किसी तरह मुख्य न्यायाधीश के पद तक पहुंच पाये, पर सवर्ण मानसिकता के दबाव में वे दलित–शोषितों के पक्ष में कोई क्रान्तिकारी निर्णय नहीं दे पाये। उनके कार्यकाल के दौरान कर्नाटक के मुख्य न्यायाधीश मा. दिनाकरण पर दलित होने के कारण न केवल भ्रष्टाचार के चार्ज लगे, बल्कि उसके स्थानान्तरण में भी रोड़े अटकाये गये। नीचे से ऊपर तक के न्यायालयों में 'दलित' जाति का चस्पा लगे होने के कारण न्याय मिलना सुगम नहीं है। साथिन भंवरी बाई के साथ बलात्कार किये जाने के बावजूद उसे न्याय देना तो दूर उल्टे उस पर झूठ का इल्जाम मंढते हुए मा. न्यायाधीश ने फैसला सुना दिया कि उच्च जाति के सवर्ण लोग नीची जाति की अछूत महिला के साथ बलात्कार नहीं कर सकते। वाह री न्यायपालिका! अगर वहां उचित संख्या में दलित जाति के न्यायाधीश होते तो शायद भंवरी देवी को उचित न्याय मिल पाता।

लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ 'मीडिया' है यानी प्रिन्ट मीडिया व इलेक्ट्रोनिक मीडिया। 'मीडिया' में सभी जगह 'दलित' नदारद हैं। 'मीडिया' के सभी पदों पर मनुमानसिकता से भरपूर सवर्ण जातियों का कब्जा है जिनसे दलितों के हित में लड़ाई लड़ने की आशा नहीं की जा सकती। दलितों के अपने सौ से ज्यादा समाचार पत्र हैं, जिन्हें 'विज्ञापन' के अभाव में 'जैसे–तैसे' दलित हित में निकला जा रहा है। समाज के लोगों से जिस आर्थिक सहयोग की आशा होती है, वह भी पूरी होती नजर नहीं आती, इसलिए कई दलित पत्र– पत्रिकायें बीच में ही बंद हो जाती हैं।

आज टी.वी. चैनल सबसे सशक्त 'इलेक्ट्रिक मीडिया' है। देश में 400 के लगभग टी.वी. चैनल हैं पर उनमें से एक भी दलित समाज का प्रतिनिधित्व नहीं करता।

बेगमपुरा टी.वी. चैनल

'इलेक्ट्रिक मीडिया' की इस कमी को पूरा करने का हमने संकल्प लिया हैं। हम चाहते हैं कि दलित समाज का प्रतिनिधित्व करने वाला हमारा भी एक टी.वी. चैनल हो। इसी को दृष्टि में रखकर हमने 'बेगमपुरा मीडिया प्रा. लिमिटेड' कम्पनी रजिस्टर्ड कराई है जिसके अन्तर्गत दलित समाज का पहला टी.वी. चैनल 'बेगमपुरा' संचालित किया गया है। इस चैनल का मुख्य उद्देश्य भगवान बुद्ध, महर्षि वाल्मीकि, संत शिरोमणि गुरू रविदास, सद्गुरू संत कबीर, गुरु नानक देव जी, गुरु घासीदास जी, बाबा साहब डा. बी.आर. अम्बेडकर, महात्मा ज्योतिबा फुले आदि महापुरुषों के स्वतंत्रता, समता व बन्धुता के सन्देश को जन–जन में पहुंचाना है ताकि दलित, शोषित, उत्पीड़ित, उपेक्षित लोगों के अन्दर जनचेतना जाग्रत हो सके और वे राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़कर देश को सबल, सुदृढ़, धन–धान्य से पूर्ण, वैभवशाली, सम्पन्न राष्ट्र बना सकें।

कौम के महाबलिदानी संत रामानन्द जी ने 24 अगस्त, 2008 को पंचशील आश्रम, दिल्ली में आयोजित 'दलित चिन्तन शिविर' का उद्घाटन करते हुए कहा था कि देश में चल रहे लगभग 400 टी.वी. चैनलों के बीच हमारा भी एक स्वतंत्र टी.वी. चैनल होना चाहिए, जहां खुलकर हम अपनी बात कह सकें। संत रामानन्द जी के सपनों को साकार करने और उनकी स्मृति को अमर बनाये रखने में 'बेगमपुरा' टी.वी. चैनल पहल की है।

इस 'बेगमपुरा' टी.वी. चैनल के संचालन में सभी का आर्थिक सहयोग, सुझाव और आशीर्वाद जरूरी है। दलित समाज के सहयोग ने 'बेगमपुरा' टी.वी. चैनल के अलावा 'बेगमपुरा मीडिया–जर्नलिज्म एंड मास–कम्युनिकेशन इंस्टीट्यूट भी संचालित किया जा सकेगा, जहां दलित–शोषित समाज के युवाओं को 'प्रिंट मीडिया' व 'इलेक्ट्रोनिक मीडिया' का प्रशिक्षण दिया जा सकेगा, जिसकी आज बहुत जरूरत है।

बेगमपुरा टी.वी. चैनल के माध्यम से जहां दलित–शोषित एकता को सुदृढ़ करने में कामयाबी मिलेगी वहीं लोकतंत्र के बाकी तीनों स्तम्भों को भी दलित हित में निर्देशित किया जा सकेगा। पर इस सबके लिए दलित समाज की सभी सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक संस्थाओं और समाज के सम्पन्न लोगों का सहयोग जरूरी है। •

पृष्ठ 1 का शेष...8-9 दिसम्बर को दिल्ली में सम्मानित होंगे साहित्यकार, समाजसेवी और कलाकार

8. **इन्जी. एन.बी. बिस्वास (रिटा. एस.ई.)**
सोशिल एक्टीविस्ट / सोशिल वर्कर
ढालेश्वर, अगरतला (त्रिपुरा)

9. **श्री मिर्जा सौकत हुसैन**
सोशिल एक्टीविस्ट / सोशिल वर्कर
सूरत (गुजरात)

10. **श्रीमती किरन बाला,**
समाजसेविका
पत्नी श्री चमनलाल गाछली (एम.एल.ए.)
परवाणु, सोलन
(हिमाचल प्रदेश)

डा. अम्बेडकर डिस्टींगुइस्ट सर्विस नेशनल अवार्ड-2024

1. **श्री शजु वलप्पन**
सोशिल वर्कर
कल्लेटुमकरा, थ्रिस्सूर (केरला)

2. **श्री थंकाचन, पी.आई.**
सोशिल एक्टीविस्ट
पोरूर, वाईनाड (केरला)

3. **डा. जोन थोमस**
सोशिल वर्कर
आर्य वैद्या फार्मेसी, त्रिवेन्ड्रम (केरला)

4. **श्री टी. सुमेश चेरूवरनम**
सोशल वर्कर
वरनम, अलप्पुज्हा (केरला)

5. **श्रीमती कमरबन ए.के.**
कुट्टमन्ना, कालीकावू
मलप्पुरम (केरला)

6. **श्री मुन्ना कुमार राम**
समाज सेवक
टुलाराम घाट, बकूलहर मठ, वेस्ट चम्पारन (बिहार)

7. **श्री सौम्य ब्रत भट्टाचारजी**
सोशिल वर्कर
सिल्चर, कच्छार (आसाम)

8. **श्री नारायन गुजराती**
सोशिल वर्कर
गुनई जागीर, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

9. **श्री बेबी एम.यू.**
सोशिल एक्टीविस्ट
करूकडोम, ईर्नाकुलम (केरला)

10. **श्री वीनीथ चन्द्रन**
सोशिल वर्कर
वरकला, त्रिवेन्ड्रम (केरला)

11. **श्रीमती हाओबाम चित्रादेवी**
सोशिल वर्कर
(रिटायर्ड असिस्टेंट डायरेक्टर–आर्ट एंड कल्चर)
नियर सन्मति ट्रेडर्स, थंगल बाजार, इम्फाल (मणिपुर)

12. **डा. आर.के. इन्दिरा देवी**
एजुकेशनिस्ट
पूर्व–वायस प्रिन्सिपल,
वर्तमान में–विजीटिंग फेकल्टी मणिपुर इंटर नेशनल यूनिवर्सिटी इम्फाल (मणिपुर)

13. **डा. मोहन कुमार दानप्पा**
एडवोकेट
नेशनल एवरनेस मैराथन रन्नर (इंडिया), कम्पली (कर्नाटक)

डा. अम्बेडकर एक्सीलेन्सी सर्विस नेशनल अवार्ड-2024

1. **डा. राजकुमार ब्रजनन्दा सिंह**
साहित्यकार / राईटर
मन्तरी पुखरी, टींगंग, इम्फाल (मणिपुर)

2. **श्री कोन थऊजम कुंजो सिंह**
सोशिल वर्कर
सिंग गमाई, जनीबुंग, इम्फाल ईस्ट (मणिपुर)

3. **डा. पी.के. बाबी**
सोशिल वर्कर
पोन्नाथरा हाऊस, नराक्कल ईर्नाकुलम (केरला)

4. **डा. जसवन्त लाल**
साहित्यकार / समाज सेवक
गांधी नगर, जोशी मठ, चमोली (उत्तराखण्ड)

5. **मन्जुन्डे गोवदा एच.एन**
सोशिल वर्कर
असिस्टेंट डायरेक्टर, सोशिल वेल्फेयर डिपार्टमेंट, चामराजा नगर (कर्नाटक)

6. **श्रीमती यशोधा आर.**
सोशिल वर्कर एंड वुमेन इंटर परेनर
विजय नगर, मैसूर (कर्नाटक)

7. **श्री कुन्नाथूर जप्रकाश**
सोशिल वर्कर
आशिशम, अयूरकोनम, त्रिवेंड्रम (केरला)

8. **डा. एच. श्रीधर,**एमबी.बी.एस.डी.
सीनियर स्पेसियलिस्ट, एडमिनिस्ट्रेटिव मेडिकल आफिसर, तालुक होस्पीटल, वेलनडुरू, चामराजा नगर (कर्नाटक)

डा. अम्बेडकर सेवाश्री नेशनल अवार्ड-2024

1. **श्री जहीरउद्दीन लस्कर**
सोशिल वर्कर
खान लेन, घोनीवाला,
डा.–मलूरग्राम, सिल्चर,
जिला–कच्छार (आसाम)

2. **श्री पल्लब देब**
सोशिल वर्कर
रोंगपुर, कटलीचरा,
जिला–हेलाकांडी (आसाम)

3. **काजी मो. सादिक अख्तर**
सोशिल वर्कर
संगठन सचिव–आल आसाम माइनोरिटीज यूनियन,
सेन्ट्रल कमेटी (आसाम)

4. **श्री हेमन्त कुमार सरमा**
सहायक अध्यापक
ग्राम / टाउन–पैला, नलबारी (आसाम)

5. **श्री निखिल चन्द्र दास**
सोशिल वर्कर
ग्राम / पो.–मसूघाट,
जिला–कच्छार (आसाम)

6. **कु. आर्या बी. कडमपट्टू**
चीफ को–ओरडिनेटर–
ननमा चेरिटेबल फाउन्डेशन,
एर्नीकुडी, अलप्पुज्हा (केरला)

7. **श्री संजय कुमार नन्दूभाई पांडया**
सोशिल वर्कर / टीचर
टिन्टोल, मोडासा, अरावली (गुजरात)

8. **श्री के. शिवकुमार**
एडवोकेट
जरनल सेक्रेट्री–
भारतीय दलित पैंथर, दवलापुर, बिलारी (कर्नाटक)

डा. अम्बेडकर साहित्यश्री नेशनल अवार्ड-2024

1. **श्री जगन्नाथ दास**
लेखक / साहित्यकार
दीलाजी, रोंग खेलन, दीफू,
जिला–कर्बी अंगलोंग (आसाम)

2. **डा. अरुण कुमार. एस.**
लेखक / साहित्यकार
पीलाप्पुज्हा, अलाप्पुज्हा (केरला)

3. **श्री सुरेश आर. पिल्लै,** लेखक
बेट्टामुक्कू, त्रिवेन्ड्रम (केरला)

4. **श्रीमती सूबाश्री रमन नेनमीनीस्सेरी,** राईटर
इरावी मंगलम, मलप्पुरम (केरला)

5. **श्री सोय मथियूज,** *राइटर*
कक्कनाड, ईर्नाकुलम (केरला)

6. **श्री के.आर. कुरूप,** लेखक
पोरनामी, मेरारीकुलम, अलप्पुजहा (केरला)

7. **डा. लवकुश प्रजापति,**
साहित्यकार
प्रबन्धक निदेशक–प्रसाद कुंवर होस्पीटल एंड रिसर्च सेन्टर, दुद्धी, सोनभद्र (उ.प्र.)
8. **श्री साली के.एस.**
राईटर
इडावनक्कड, ईर्नाकुलम (केरला)
9. **श्रीमती ऐश्वर्य, एम.वी.**
राईटर
पेरिनवगवु, थ्रिस्सूर (केरला)
10. **श्री परमेश्वरवरन कल्लारा**
राईटर
कल्लारा, कोट्टायम (केरला)
11. **श्री सूचित चक्रबर्ती**
लेखक / साहित्यकार
जादवपुर, कोलकत्ता (प. बंगाल)
12. **श्री दिलीप कुमार परामानिक**
लेखक / साहित्यकार
डायमंड हारबोर,
साउथ 24 परगना
(प. बंगाल)
13. **श्री तरुण कान्ति मंडल**
लेखक / साहित्यकार
कन्नींग, साऊथ 24 परगना
(प. बंगाल)
14. **श्री अनिल कुमार पवित्रेश्वरम**
लेखक / साहित्यकार
वडाक्केभरनाथू, कोलम (केरला)
15. **श्री अरूमानूर रथीकुमार**
लेखक / साहित्यकार
पूवर, थीरूवानन्तपुरम (केरला)

डा. अम्बेडकर कलाश्री नेशनल अवार्ड–2024

1. **श्री बीनूकुट्टन कीज्हील्लम**
आर्टिस्ट
कीज्हील्लम, ईर्नाकुलम (केरला)
2. **श्रीमती ग्रेसी फिलीफ**
आर्टिस्ट
कुडल, पथनामथिट्टा (केरला)
3. **श्री कल्लीयूर जनानी गोपान वी. आचारी**
जनानी कल्लीमूर, त्रिवेन्ड्रम (केरला)
4. **श्री मुरूकन कृष्णापुरम**
आर्टिस्ट
एडक्ककुज्ही, कन्याकुमारी (तमिलनाडु)
5. **श्री गीनादेवन सी.जी**
कलाकार
इडाक्कट्टू वायल, ईर्नाकुलम (केरला)
6. **श्री मनीकुट्टन पी.आर,**
कलाकार
कैलाशपति क्लासिक डांस अकाडेमी, पोर्ट ब्लेयर
(अंडेमान–निकोबार आईलैंड)

वीरांगना सावित्रीबाई फुले नेशनल अवार्ड–2024

1. **श्रीमती पवित्रा टम्टा उर्फ पमी नवल,** लोक गायिका
प्रधान अध्यापिका–गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल, राडूवा, नागनाथ पोखरी, चमोली (उत्तराखंड)
2. **सुश्री फरीना आतेश जीवानी**
सोशिल वर्कर
एफ–50, तीर्थ आन्दन सोसाइटी, बड़ोदा (गुजरात)

सद्गुरू कबीर नेशनल अवार्ड–2024

आचार्य रतनलाल सोनाग्रा
वरिष्ठ साहित्यकार
विमान नगर, पुणे (महाराष्ट्र)

बाबू जगजीवन समता नेशनल अवार्ड–2024

डा. चन्द्र शेखर, समाज सेवक
मंडी सहायक, के.यू.एम.एस., ऋषिकेश
देहरादून (उत्तराखंड)

भगवान बुद्ध नेशनल अवार्ड–2024

1. **श्री रामलाल आर्य**
लेक्चरार–भूगोल
विक्टोरिया क्रास दरवान सिंह गवर्नमेंट कालेज, कर्ण प्रयाग (उत्तराखंड)
2. **श्री विराज परमार**
सोशिल वर्कर
म.नं. 632/1, सेक्टर–एस/बी गांधी नगर (गुजरात)
3. **श्री हरि प्रसाद एम.वी.**
एडवोकेट एंड सोलीसिटर
प्रेजिडेंट–इंगले फाऊन्डेशन
विनायक बडवाने, मान्डया सिटी (कर्नाटक)

भगवान महावीर नेशनल अवार्ड–2024

शाह दीपा संजीव (दिशा)
नवरंगपुरा, अहमदाबाद
(गुजरात)

श्री राकेश सोनी मेमोरियल गुरू घासीदास नेशनल अवार्ड–2024

प्रो. (डा.) के.पी. यादव (विश्व गुरू)
वायस चांसलर, मट्स यूनिवर्सिटी, रायपुर (छत्तीसगढ़)

वीरांगना त्रिलोचन सुमनाक्षर मेमोरियल नेशनल अवार्ड–2024

श्री गुलशन सोनी
सोशिल एक्टीविस्ट
एन.सी.आर. दिल्ली

बाबू परमानन्द मेमोरियल नेशनल अवार्ड–2024

श्री पुरुषोत्तम लाल
सुपुत्र श्री पारस राम
स्टेशन सुपरिन्टेंडेन्ट, रामनगर रेलवे स्टेशन, जम्मू–कश्मीर (जे एंड के)

डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एक्सीलेंसी सर्विस नेशनल अवार्ड–2024

1. **श्रीमती फरदोषी बेगम लस्कर**
टीचर
एन.जी.एच.एस. स्कूल, सोनाई, कच्छार (आसाम)
2. **श्री अतिकुर रहमान लस्कर**
सोशिल वर्कर
असिस्टेंट टीचर, नूतन राम नगर एल.पी. स्कूल, रूपैबली, कच्छार (आसाम)
3. **श्रीमती रीनी बेगम लस्कर**
असिस्टेंट प्रोफेसर, एच.ओ.डी. बंगाली डिपार्टमेंट,
वेस्ट सिल्वर कालेज, बरजात्रापुर, कच्छार (आसाम)
4. **डा. आर.सी.पी. सिसोदिया**
एक्स–सी.एम.एच.ओ.आर.डी., गर्दी मेडिकल कालेज, उज्जैन
(मध्य प्रदेश)

लोह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय अवार्ड–2024

श्री कल्याण सिंह वी. चौहान
सोशिल वर्कर
सहजानन्द पार्क, निकोल–नरोड़ा रोड अहमदाबाद (गुजरात)

प्रोफेसर – मानद उपाधि

श्री राजन लाल जावा 'निर्मोही'
दलित साहित्यकार
जोधपुर (राजस्थान)

आचार्यश्री – मानद उपाधि

संत श्री निर्भयदास जी महाराज
सर्वेसर्वा बाबा रामदेव जी का मन्दिर
श्री चिमनदास जी का आश्रम
सुख सागर धाम, जोधपुर (राजस्थान)

भारत के सूरज–बाबा साहब डा. अम्बेडकर

• डॉ. के.आर. नारायणन, पूर्व राष्ट्रपति, भारत

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर भारत के महानतम सपूतों में से एक थे। भारतीय राष्ट्रीयता आंदोलन को अगर मैं उसे उसके व्यापकतम अर्थों में इस्तेमाल करूं तो, उसके द्वारा उत्पन्न व्यक्तियों में वे कद्दावर व्यक्ति थे। जहां इतिहास डॉ. अम्बेडकर को उनके बहुपक्षीय व्यक्तित्व और न्यायविद् तथा संविधान निर्माता, विचारक, लेखक और विवेकी, एक महान राजनीतिक संगठनकर्ता और मोहिनी शक्ति वाले नेता के रूप में उनके बहुपक्षीय योगदानों के लिए याद करेगा, वहीं उन्हें सर्वोपरि एक महान और संवेदनशील सामाजिक विद्रोही, एक लड़ाकू सुधारक और इस उपमहाद्वीप के पददलित जनों के मुक्तिदाता के रूप में याद किया जायेगा।

गौतम बुद्ध के युग से भारत ने कई महान व्यक्तियों का उदय और हिन्दू धर्म और समाज के सुधार को समर्पित अनेक धार्मिक और सामाजिक आंदोलन देखे हैं। लेकिन बुद्ध के बाद वह डॉ. अम्बेडकर ही थे जिन्होंने हिन्दू समाज व्यवस्था के मूलाधार जाति व्यवस्था को सुव्यवस्थित और मूलभूत चुनौती प्रस्तुत की।

भारतीय सामाजिक इतिहास की अधिकांश शताब्दियों में भी अस्पृश्यता की बुराई पर निरंतर आक्रमण होते रहे। लेकिन बहुत कम ही लोग इस तथ्य को समझ सके कि अस्पृश्यता जाति व्यवस्था के सामाजिक प्रकटीकरण का चरम था, इससे पूरी समाज व्यवस्था पर काली कुरूप छाया पड़ गई थी और यह हिन्दू समाज पर लगा कोई गंदा फोड़ा नहीं था जिसे वर्ण व्यवस्था को बनाये रखते हुए भी काटकर फेंका जा सकता है। महात्मा गांधी भी, जो अछूतों के अधिकारों के महानतम समर्थक थे और जिन्होंने एक बार आदेशपूर्ण ईमानदारी से कहा था–''अगर हिन्दुत्व को जीना है तो अस्पृश्यता को मरना होगा, और अस्पृश्यता को जीना है तो हिन्दुत्व को मरना होगा।'' उन्होंने भी जाति और अस्पृश्यता के इस अभिन्न संबंध को नहीं समझा था।

वर्तमान सामाजिक तनावों को समझने के लिए जाति व्यवस्था की कुछ और गहरी जांच जरूरी है। डॉ. अम्बेडकर ने जाति व्यवस्था को श्रद्धा की आरोहक सीढ़ी और तिरस्कार की अवरोहक सीढ़ी कहा था। हिन्दू धर्म की सामाजिक समरनीति निर्धारकों ने न सिर्फ समाज को चार जातियों में विभक्त किया बल्कि एक के नीचे दूसरे को रखा, और इनमें भी बहुत सी उप–जातियां बनती रहीं और सबसे नीचे रखा एक विशाल अस्पृश्यों के समुदाय को हिन्दू सामाजिक राजनीतिज्ञों ने इन्हें एक के नीचे दूसरे को किसी किस्म के जटिल संतुलन और प्रतिसंतुलन के रूप में रखा, जिसमें हर जाति की अपने से ऊपर की जाति के प्रति निष्ठाएं और सेवाएं तय थीं, और अपने से नीचे की जाति की निष्ठाओं पर उसका अधिकार था, और अस्पृश्यों के शोषण का सबको सीधा अधिकार था।

इस अवरोहक श्रेणीकरण की उल्लेखनीय बात यह थी कि हर जाति बीच की, निचली और अस्पृश्य जात तक को वर्चस्व और शोषण का अपना अलग दायरा प्रदत्त था और अब भी है, भले वह दायरा कितना भी छोटा क्यों न हो। लगभग हर समूह के पास अपने नीचे कोई है जिसे वह नीच समझ सके, जिस पर हुकूमत कर सके। इससे ऊपर से जो लातें पड़ती हैं उसके मुआवजे के तौर पर उसे कुछ मानसिक और आर्थिक लाभ मिलता है। आध्यात्मिक तौर पर उसे कुछ मानसिक और आर्थिक लाभ भी मिलता है। आध्यात्मिक तौर पर अस्पृश्यों के दयनीय भाग की सफाई 'कर्म' और पुनर्जन्म के सिद्धांत से जबकि इस मोहक सिद्धांत ने उन्हें दूर कर ही अज्ञात भविष्य में जन्म और मृत्यु के चक्र में आशा की टिमटिमाती किरण भी प्रदान की। अछूतों में भी विभक्तियां और श्रेणियां हैं। अगर यह संतुलन और विशेषाधिकारों का ताना बाना न होता तो इसमें संदेह है कि जाति व्यवस्था इतने लम्बे समय तक न बनी रहती।

हिन्दू समाज व्यवस्था का यही संतुलन और प्रतिसंतुलन है जिसने इस व्यवस्था की स्पष्ट असमानताओं और अन्यायों के खिलाफ अखिल भारतीय स्तर और शक्ति वाले सामाजिक और राजनीति आंदोलन के खिलाफ आंदोलनों के उभार को रोका। इसके अतिरिक्त अपने देश में मौजूद क्षेत्रीय और भाषाई विभिन्नताएं भी हैं। अगर असमानताएं और अन्याय विरोध और सुधारक आंदोलनों के कारण बनते हैं तो भारत में ये बहुत हो रहे हैं। और अगर गरीबी क्रांति का कारण है तो इसकी अधिकता रही है। इसलिए अगर जनता, राजनीतिक दल और सरकार हमारे देश की प्रगति में दिलचस्पी रखते हैं तो उन्हें जाति व्यवस्था के इस विराट और जटिल जाल की ओर ध्यान देना होगा जो जाल में सभी सुधारवादी और क्रांतिकारी ताकतों को फंसा रही है और जनता के उत्थान और समाज की पुनर्रचना हेतु समस्त रचनात्मक नीतियों और

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020

कार्यों को अपाहिज बना रही है। यह संभव है कि विगत में जाति व्यवस्था ने हिन्दू समाज को बाहरी ताकतों के आक्रमणें से बचने में मदद दी। लेकिन आज और कल यह हमारे समाज में विखंडनकारी और विनाशकारी ताकत बन जायेंगी।

यथार्थ यह है कि अनुसूचित जातियां भूमि को जोतने वाले मेहनतकश हैं, हमारे ग्रामीण और शहरी मजदूर वर्ग का बड़ा हिस्सा हैं और साधनहीनों के बड़े समुदाय का सर्वाधिक शोषित और उत्पीड़ित हिस्सा है। भारत मं अनुसूचित जातियों के नेतृत्व और विभिन्न राजनीतिक दलों के नेतृत्व का काम है उन्हें हमारे सामाजिक संगठनों और राजनीतिक दलों की मुख्यधारा में लाना, न कि उनसे अलग और सीमित संगठनों की तरह पेश आना, सिवाय उन प्रश्नों पर कि जो उन्हीं से विशेष रूप से राजनीतिक और भौगोलिक दृष्टि से सम्बन्ध रखते हैं।

स्थानीय और प्रदेशीय संगठन हो सकते हैं। कृषि मजदूरों, भंगियों, नाइयों, धोबियों, लोहारों आदि पर आधारित संगठन और यूनियन हो सकते हैं जो अखिल भारतीय स्तर पर पेशावर, श्रम या शिल्प के महासंघ बना सकते हैं। हमें अपने विशेष लक्ष्यों की पूर्ति का प्रयास सामान्य अखिल भारतीय संगठनों के भीतर ही करना होगा।

आजादी के इतने साल बाद, अब जनता की दशा में सुधार और समाज व्यवस्था का पुनर्गठन अत्यन्त आवश्यक हो गया है। हमारी सौदेबाजी संगठित और सबल बनायी जानी चाहिए। हमारी मतदान शक्ति जो भारत की वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था के बहुदलीय गठबंधनों के चरण में काफी बड़ी और निर्णयक है, को संगठित और संयोजित करना होगा ताकि देश के साधनहीन बहुमत के साथ अनु. जातियां भी समस्त सत्ता व्यवस्था को प्रभावित करने में सक्षम हो सकें।

हमने देखा कि अनु. जातियों के मूल अधिकारों की मांगों और संगठित आंदोलन का परिणाम रहा है ऊंची जातियों की हिंसक प्रतिक्रिया। बिहार, मराठवाड़ा, पूर्व उत्तर प्रदेश, हरियाणा, और देश के कई अन्य भागों में दलितों और भूस्वामी पिछड़ी जातियों के बीच तनाव बढ़ रहे हैं। ये तनाव अक्सर ऊंची जातियों से नहीं, 'कुलक' और मध्यम वर्गीय हित की हैं जो अनु. जातियों की उभरती मांगों और आकांक्षाओं से टकरा रही हैं।

इन नये घटनाक्रम में चिंताजनक बात यह है कि दलितों को आतंकित करने और संविधान तथा देश के कानूनों द्वारा उन्हें प्रदत्त अधिकारियों के उपयोग से उन्हें वंचित करने के लिए ऊंची और पिछड़ी जातियां हिंसा का सहारा ले रही हैं। यह एक किस्म की, उन्हें रोकने की, उन्हें रोकने के लिए पहले से ही की जाने वाली या प्रतिक्रांतिकारी हिंसा है। सरकार और जनता ने अनु. जातियों की रक्षा करने के और ऐसी स्थितियों में उनके प्राण, घर और हितों की सुरक्षा के उपाय अभी तक नहीं खोजे हैं।•

(भारत के राष्ट्रपति के रूप में दिया गया भाषण)

दलित साहित्य और उसकी पृष्ठभूमि

• डा. माता प्रसाद, पूर्व राज्यपाल, अरुणाचल प्रदेश

दलित साहित्य शोषित, अपमानित, पीड़ित समाज की स्थिति को बदलने का एक विकल्प है। भारतीय संविधान लागू होने के 20 वर्षों के बाद भी जब इनमें भी शिक्षा की जागरूकता से प्रभावित समाज की स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया तो युवकों में असंतोष पैदा होने लगा। इस स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए महाराष्ट्र के कुछ युवकों ने अग्रणी भूमिका निभायी।

9 जुलाई, 1972 ई. को कुछ युवक एक जगह इकट्ठे होकर 'दलित पैंथर' नामक एक संस्था बनाई जिनमें नामदेव ढसाल, लक्ष्मण ढसाल, जी.बी. पंवार आदि थे। इस संस्था के लोगों ने अपने लेखन द्वारा समाज की विषमता के विरुद्ध चोट करना शुरू किया। 'दलित पैंथर' नाम रखने की प्रेरणा उन्हें 'ब्लैक पैंथर' से मिली।

सत्रहवीं सदी में अमरीका के गोरे लोग अपने फार्मों पर खेती कराने के लिए अफ्रीका के बहुत से काले लोगों को बंधक बनाकर लाकर खेती कराते थे। उन्हें अपमानित, पीड़ित करते थे। 19वीं सदी में जब गुलामी प्रथा खत्म हुई तब वहां के ब्लैक लोगों ने ब्लैक पैंथर संस्था बनाकर अपने अपमान और उत्पीड़न के विरुद्ध लेखन शुरू किया था। दलित पैंथर ने दलित की परिभाषा इस प्रकार की राजसत्ता, धर्म, सम्पत्ति और सार्वजनिक हैसियत के आधार पर होने वाली सभी नाइंसाफियों के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रतिबद्ध अनुसूचित जातियां, जनजातियां, छोटे किसान, घुमन्तू जातियां दलित मानी जायेंगी। सन् 1975 ई. में महाराष्ट्र से ही कमलेश्वर जी के संपादन में 'सारिका' पत्रिका में मराठी दलित साहित्य पर विशेषांक निकाला गया।

इसी काल में औरंगाबाद से

गंगाधर पानतावड़े ने 'अस्मिता दर्श' मासिक पत्रिका का सम्पादन शुरू किया। जिसमें राजा ढाले, बाबुराव बागुल, रामदेव ढसाल, दया पंवार, अर्जुन डांगले आदि सहयोगी बने। इन लोगों ने जो लेखन शुरू किया उसे 'दलित साहित्य' कहना शुरू किया। बाद में दलित पैंथर के लोग भी इससे जुड़ गये क्योंकि उनकी भावना का इसमें समावेश था।

दलित साहित्य लेखन दलितों के आत्मसम्मान का प्रतीक बन गया। यह लेखन 'स्वानुभूति' और भुक्तभोगियों का यथार्थवादी साहित्य बन गया। यह साहित्य डा. अम्बेडकर के विचारों से प्रभावित हैं। इसने अपने को वर्ण, जाति, धर्म, लिंग, नस्ल से दूर रखा। पहले इन्होंने अपने भुक्तभोगी जीवन को आत्मकथाओं में लिखा, फिर अन्य विधाओं में दलित साहित्य का सृजन किया।

महाराष्ट्र के दलित साहित्य का प्रभाव हिन्दी पर पड़ा। 80 के दशक में हिन्दी साहित्य लिखना आरम्भ हुआ। इस अवसर पर नवोदित दलित लेखकों, पत्रकारों व सम्पादकों ने परस्पर विचार–विमर्श किया कि सरकारी साहित्य अकादमी की तरह उनकी भी दलित साहित्य अकादमी होनी चाहिए जो दलित साहित्य व दलित लेखकों को प्रोत्साहित करे, उनका मार्गदर्शन करे और दलित साहित्य की सीमा और परिभाषा निर्धारित करे। इसी उद्देश्य को लेकर भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना का निश्चय किया गया। 6 अगस्त, 1984 को नई दिल्ली के कान्स्टीच्यूशन क्लब में देश के सैकड़ों दलित लेखक, पत्रकार व सम्पादक और समाजसेवियों का एक विशेष सम्मेलन आयोजित किया गया और वहीं पर भारत के उप प्रधानमंत्री बाबू जगजीवन राम ने विधिवत रूप से भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना की घोषणा की और इसके संचालन की बागडोर डा. सोहनपाल सुमनाक्षर को बतौर संस्थापक अध्यक्ष के रूप में सौंप दी। बाबू जगजीवन राम जी ने अपने उद्बोधन में दलित साहित्य सृजन के अन्तर्गत अपना गौरवमयी दलित इतिहास को खोजने पर जोर दिया जो ऋग्वेद जैसे हिन्दू धर्मग्रंथों में झलकता है। बाबूजी के निर्देशानुसार भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने दलित साहित्य को स्थापित करके और दलित साहित्यकारों को सम्मानित करके दलित अस्मिता को आगे बढ़ाया है। आज दलित साहित्य प्रतिष्ठित साहित्य है और दलित साहित्यकार प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं जो गौरवान्वित होकर दलित साहित्य की अभिवृद्धि कर रहे हैं। डा. सुमनाक्षर के नेतृत्व में अकादमी का परचम देश से बाहर विदेशों तक लहलहा रहा है। अब तो इस क्षेत्र में अनेक नामी दलित साहित्यकार आ गये हैं। इनमें सर्वश्री डा. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी, बिहारीलाल हरित, डा. एन. सिंह, डा. जयप्रकाश कर्दम, मोहनदास नैमिशराय, कंवल भारती, श्यौराज सिंह 'बेचैन', ओमप्रकाश बाल्मीकि, डा. सोहनपाल सुमनाक्षर, डा. कुसुम वियोगी, डा. धर्मवीर, ईश कुमार गंगनिया, डा. कुसुम मेघवाल, डा. हेमलता माहीश्वर, सुशीला टांकभोरे, रजनी तिलक, पारसनाथ, विपिन बिहारी, डी.आर. जाटव, तुलसीराम, एच.एल. दुसाध, डा. कालीचरण स्नेही, मूलचन्द सोनकर, जवाहरलाल कौल व्यग्र, सूरजपाल चौहान, डा. रामचन्द्र, मलखान सिंह, पूरन सिंह आदि के नाम लिये जा सकते हैं। दलित साहित्य में हर एक विधाओं में पर्याप्त मात्रा में इस समय दलित साहित्य उपलब्ध है। दो दर्जन पत्रिकाएं दलित साहित्य संवर्धन में लगी हैं जिनमें प्रमुख हैं–अम्बेडकर इन इंडिया, आश्वस्त, बयान, दलित दस्तावेज, बोधिसत्व बाबा साहब, दलित साहित्य वार्षिकी, युद्धरत आम आदमी, गरिमा भारती, तीसरा पक्ष, भीम पत्रिका, अपेक्षा, हम दलित, हिमायती आदि के नाम लिये जा सकते हैं।

इस समय मराठी हिन्दी के अतिरिक्त गुजराती, पंजाबी, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, बंगला, और जनजातीय भाषाओं में दलित साहित्य की पर्याप्त रचनाएं हो रही हैं। इस समय कई विश्वविद्यालयों में अनेक छात्र दलित साहित्य पर शोध कर ग्रंथ लिख रहे हैं।

पहले जब दलित साहित्य का सृजन शुरू हुआ तो कुछ लोगों ने उसका विरोध पृथकतावादी साहित्य कहकर किया था किन्तु उस समय भी प्रसिद्ध साहित्यकार कमलेश्वर, मैनेजर पाण्डेय, बृजबिहारी तिवारी, रमणिका गुप्ता, राजेन्द्र यादव, मुद्रा राक्षस जैसे साहित्यकारों ने इसका समर्थन किया था। अब तो दलित साहित्य का विरोध कम हो गया है। कुछ लोगों का विचार है कि दलित शब्द संवैधानिक नहीं है इसलिए उसे बन्द कर देना चाहिए और दलित साहित्य के स्थान पर अम्बेडकरवादी साहित्य या बहुजन साहित्य अथवा जाजीवक साहित्य नाम देना चाहिए। परन्तु दलित शब्द दबाये हुए अपमानित लोगों को पूर्व की स्थिति से उबारने को प्रेरित करता है। डा. पुरुषोत्तम अग्रवाल का कथन है कि हरिजन शब्द सवर्ण दृष्टिकोण को प्रकट करता है जिसमें पश्चाताप की भावना निहित है। 'दलित' शब्द करुणा या पश्चाताप का नहीं, बल्कि बेवजह दमन या अपमानित होने के स्वाभाविक रोष को व्यक्त करता है। इसलिए मराठी, हिन्दी, गुजराती तथा अन्य भाषाओं में दलित साहित्य का प्रयोग किया जाता है। •

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009